आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 23-09-14

हम कलयुगी आत्माओं को अपनी युक्ति से संपूर्ण पवित्रता और बेहद का वैराग्य धारण कराके मनुष्य से देवता बनाने वाले बेहद के बाप ने कहा, मीठे बच्चे - तुम प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे आपस में भाई-बहन हो. यह वन्डरफुल सतसंग है जहॉ तुम्हें जीते जी मरना सिखलाया जाता है. पवित्रता की धारणा कर जीते जी मरने वाले ही हंस बनते हैं.

आज भी कई अज्ञानी आत्माये समझती है की ब्रह्माकुमारी संस्था आपस में भाई-बहन बनाती हैं. क्योंकि उन्हें न परमपिता-परमात्मा शिव का पता है, न प्रजापिता ब्रह्मा का. उन्हें यह स्पष्ट समझाना चाहिए की हम भारतवासियों के तीन बाप है. सबसे पहले है पारलौकिक बाप - शिव, जिन्हें सर्व आत्माये पिता कहती है या कहे आत्माओं का पिता - परमपिता-परमात्मा शिव. दूसरा है अलौकिक बाप - ब्रह्मा क्योंकि वह रचयिता पारलौकिक बाप जब इस सृष्टि पर आते है तो उन्हें अपना शरीर नहीं हैं तो उन्हें ब्रह्मा के तन का सहारा लेना पड़ता हैं. ब्रह्मा का शरीर माध्यम बनता है जिसके द्वारा वह पारलौकिक बाप आकर हम आत्माओं को ऐडप्ट करते है यानी अपना वारिस बनाते हैं. वह पारलौकिक बाप, ब्रह्मा के मुख का सहारा लेकर हम मनुष्यों को आत्मा का, परमात्मा का और सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान देते हैं. यह ज्ञान सुनने वाली आत्माये ही ब्रह्मा-मुखवंशावली ब्राह्मण कहलाती हैं जो सारे संसार में ब्रह्माकुमारी-ब्रह्माकुमार के नाम से जाने जाते हैं.

यह तो सब जानते है की हम सब आत्माये वह परमपिता-परमात्मा शिव की संतान है तो वह है सर्व आत्माओं का पिता इसलिए हम सब आत्माये आपस में आत्मा भाई-भाई हो जाते है. फिर जब हम ब्रह्मा द्वारा ऐडप्ट होते है तो ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी कहलाते हैं. इस आधार से हम भाई-बहन के नाते से बंधते हैं. ब्रह्मा ही सबसे पहली आत्मा है जिस ने सबसे पहले परमात्मा को पहचान कर, परमात्मा से सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान प्राप्त किया. फिर परमात्मा ने ब्रह्मा के मुख द्वारा यह ज्ञान विश्व की अनेक आत्माओं को दिया, जिसे ब्रह्मा की प्रजा कही जाती है इसलिए ब्रह्मा का नाम आदि-देव अथवा प्रजापिता ब्रह्मा

पड़ा. फिर वही ब्रह्मा की आत्मा सतयुग में आने वाली सबसे प्रथम आत्मा बनती है तो वहॉ उन्हें संपूर्ण निर्विकारी श्रीकृष्ण के नाम से जाना जाता हैं.

परमात्मा का मुख्य कार्य ब्रह्मा द्वारा नयी सृष्टि स्वर्ग की स्थापना करना हैं. इसलिए जो आत्माये स्वर्ग में पार्ट बजाने आने वाली है उन्हों को ही परमात्मा स्वयं आकर यह ज्ञान सुनाते है और फिर उन्हों की आत्माओं को पतित से पावन बनने का रास्ता बताते हैं. यह तो सब मानते है की देवी-देवताये सब पवित्र है तो हम मनुष्यों को ही परमात्मा यह ईश्वरीय ज्ञान देकर मनुष्य से देवता बनाते हैं. मनुष्य से देवता बनने के लिए यह ज्ञान सिर्फ सुनना ही नहीं लेकिन स्वयं में धारण करना भी इतना ही जरूरी हैं. इसमें सबसे मुख्य हैं - पवित्रता. आज के तमोप्रधान मनुष्य यह ऊँच ईश्वरीय ज्ञान को धारण कर सके इसलिए ही परमात्मा ने ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी का टाईटल देकर, इस ज्ञान को सुनने और धारण करने वालों के लिए बाहिये दृष्टि से भाई-बहन का नाता और अन्दर की श्रेष्ठ वृति से आत्मा भाई-भाई के नाते से बाधा हैं, जिसे की वह पवित्रता की धारणा में पक्के रहे.

इस ज्ञान को धारण करने वाली आत्माओं के लिए दूसरी मुख्य धारणा है - बेहद की वैराग्यता. जिस में आत्मा को पुरानी दुनिया, पुराने साधन, पुराने सम्बन्ध और पुराने शरीर से मन-बुद्धि से वैराग्य दिलाया जाता हैं. इस दुनिया में रहते हुए भी मन-बुद्धि से किसी के प्रति (साधन, सम्पति, सम्बन्ध और शरीर) भी लगाव (मोह) न हो. इसको ही बाबा ने आज कहा तुम्हें जीते जी मरना सुखलाया जाता है. यही आत्माओं के लिए गायन है नष्टों मोहा, स्मृति लब्धा. जब आत्मा यह शरीर छोड़े तो वह एक परमात्मा की याद में ही शरीर छोड़े, दुसरा किसी में तनिक भी खिंचाव न हों.

ॐ शांति.